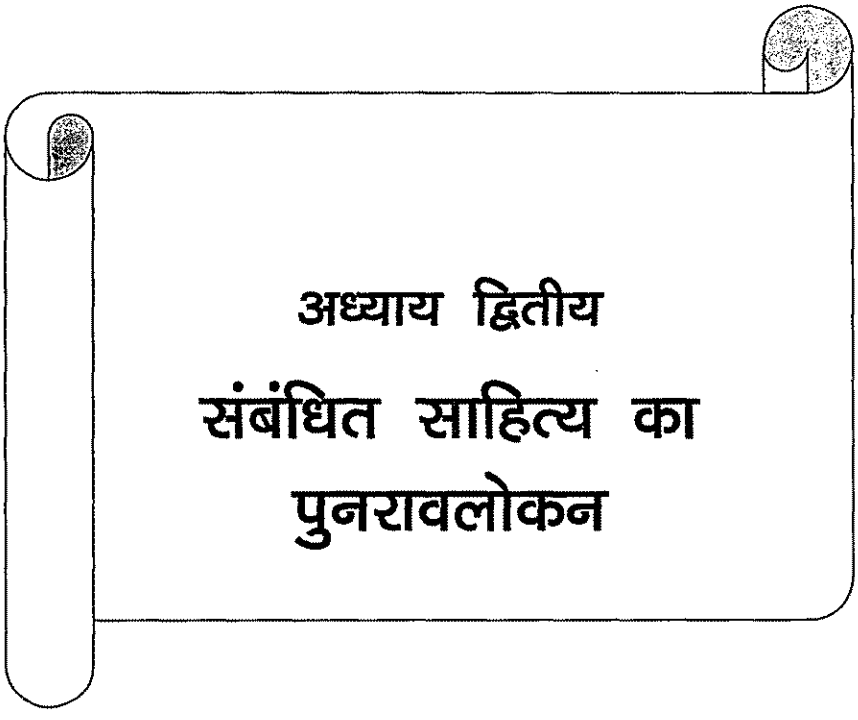

## अध्याय द्वितीय

# संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

# अध्याय द्वितीय

# संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

## 2.1 प्रस्तावना

किसी भी क्षेत्र में अनुसंधान की प्रक्रिया में संबंधी साहित्य का पुनरावलोकन अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है। शोध कार्य के अंतर्गत शोध संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक एवं अनिवार्य प्रक्रिया है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है। संबंधी साहित्य से तात्पर्य है, अनुसंधान की समस्या से संबंधित सभी प्रकार के साहित्य–पुस्तकों, ज्ञानकोशों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध, प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है। जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं का निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा आदि तैयार करने एवं अनुसंधान कार्य को उचित दिशा में बढ़ाया नहीं जा सकता जब तक अनुसंधानकर्ता को ज्ञान न हो जाये कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है? तब तक न तो समस्या का निर्धारण कर सकते है और न ही दिशा में सफल हो सकता है।

**गुडबार तथा स्केट्स (1959) कहते हैं–**

**"एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधी संबंधी आधुनिकतम के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिये भी उस क्षेत्र में संबंधित सूचनाओं से परिचित होना आवश्यक है।"**

## 2.2 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन का महत्व

संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन का महत्व निम्न बिन्दुओं के द्वारा स्पष्ट है–

1. वह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है।

2. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिये यह आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञात हो की ज्ञान की वर्तमान सीमा कहा जाती है वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है।

3. समस्या से संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लग सकता है।

4. सत्यापन करने के लिये कुछ अनुसंधानकर्ताओं को नवीन दिशा में शोध करने की आवश्यकता होती है।

5. किसी अनुसंधानकर्ता द्वारा पूरा वही अनुसंधान कार्य उसी प्रकार किया जा चुका हो तो हमारा प्रयास निर्थक साबित होगा, अतः संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन हमारे अनुसंधानकर्ता के प्रयास को सार्थकता प्रदान करता है।

6. इससे अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अनादृष्टि प्राप्त होती है।

## 2.3 समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

1. **यादव (2008)** "हायर सेकेण्ड्री स्कूल विद्यार्थियों का संवेगात्मक बुद्धि, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।"

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी ने हायर सेकेण्ड्री स्कूल के विद्यार्थियों का संवेगात्मक बुद्धि, सृजनात्मकता का उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अंतर तथा प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

2. विवरणात्मक पद्धति के द्वारा शोध कार्य किया जिनमें न्यादर्श के चयन के लिये 800 विद्यार्थियों को चार स्कूल को लाटरी विधि से चयन किया गया।

3. परिकल्पना की जाँच के लिये मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, 'टी' टेस्ट सांख्यिकी विधियों का चयन किया।

2. प्रस्तुत शोधकार्य सर्वे विधि के माध्यम से 600 विद्यार्थियों (300 बालक तथा 300 बालिकाओं) का सरकारी एवं निजी स्कूल से स्तरीयकृत विधि से चयन किया गया।

3. आँकड़ों के विश्लेषण में मध्यमान का विचलन, प्रमाणिक विचलन तथा 'टी' टेस्ट का उपयोग सार्थकता की जाँच करने के लिये किया गया।

**निष्कर्षः**–शोधार्थी ने शोध कार्य में पाया की बालक–बालिकाओं के पारिवारिक, सामाजिक स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है। जबकि विद्यालय समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है।

4. **बिन्नूलाल (2010)** "सामाजिक कौशल एवं शिक्षण योग्यता का विद्यार्थी एवं शिक्षक के मध्य संवेगात्मक ज्ञान के संबंधों का अध्ययन।"

1. आन्ध्रप्रदेश केरला– शोध विषय में सामाजिक कौशल एवं सामाजिक नियम को जानने में संवेगात्मक ज्ञान कितना महत्वपूर्ण सार्थक, मानव व्यवहारों की उपयोगिता में व्यवसायिक एवं व्यक्तिगत सफलता का अध्ययन करना।

2. वर्तमान अध्ययन में सर्वे विधि का उपयोग किया गया। न्यादर्श के रूप में 350 विद्यार्थियों और शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया।

3. आँकड़ों की सार्थकता की जाँच में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, 'टी' टेस्ट, सहसंबंध गुणांक सांख्यिकी विधि का चयन किया।

**निष्कर्षः–** शोध अध्ययन में विद्यार्थियों तथा शिक्षकों का संवेगात्मक ज्ञान एवं सामाजिक कौशल के मध्य सकारात्मक संबंध और शिक्षण योग्यता के मध्यम भी सकारात्मक सार्थकता पायी गयी, जिसमें शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में सामाजिक कौशल विद्यार्थियों को दी जाती है। जिससे अतिरिक्त शिक्षण कौशल का विकास हो सके।

**निष्कर्षः–** प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा परिकल्पना जाँच के पश्चात देखा की संवेगात्मक बुद्धि सृजनात्मकता का शैक्षिक उपलिब्ध के साथ सार्थक संबंध नहीं है, परन्तु संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मकता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ा है। जिसमें शासकीय विद्यालय के छात्रों की सृजनात्मकता उच्च तथा अशासकीय विद्यालयके छात्रों की सृजनात्मकता निम्न पाई गई।

**2. रेड्डी,एवं अनुराधा (2008)** "हायर सेकेण्ड्री शिक्षक का संवेगात्मक ज्ञान, व्यवसायिक तनाव तथा कर्तव्य प्रदर्शन के मध्य संबंधों का अध्ययन।"

1. अध्ययन प्रक्रिया में जिला वल्लुर तमिलनाडू के 27 शिक्षकों का संवेगात्मक ज्ञान, व्यवसायिक तनाव तथा कर्तव्य प्रदर्शन के संबंधो को जानना।

2. प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वे विधि द्वारा साधारण लाटरी विधि से न्यादर्श का चयन किया गया।

3. वर्तमान अध्ययन कार्य में आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिये प्रतिशत, मध्यांक, प्रमाणिक विचलन, मध्यमान विचलन त्रुटि, सहसंबंध सांख्यिकी विधि का उपयोग किया।

**निष्कर्षः–** निष्कर्ष प्रस्तुत शोध में संवेगात्मक ज्ञान एवं व्यवसायिक तनाव में ऋणात्मक सहसंबंध तथा संवेगात्मक ज्ञान एवं कर्तव्य प्रदर्शनों में सकारात्मक सहसंबंध पाया गया जिससे शिक्षक अपने भविष्य में कर्तव्य प्रदर्शन के साथ अच्छा कार्य कर सकें।

**3. चतुर्वेदी (2008)** "विद्यार्थियों के लिंग अनुसार उनके पारिवारिक, सामाजिक स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन।"

1. अध्ययन का औचित्य सामाजिक परम्परा के आधार पर चलने वाली कुरीतियों एवं पारिवारिक समस्याओं के साथ संवेगात्मक समायोजन की कठिनाईयों को जानना।

2. प्रस्तुत शोधकार्य सर्वे विधि के माध्यम से 600 विद्यार्थियों (300 बालक तथा 300 बालिकाओं) का सरकारी एवं निजी स्कूल से स्तरीयकृत विधि से चयन किया गया।

3. आँकड़ों के विश्लेषण में मध्यमान का विचलन, प्रमाणिक विचलन तथा 'टी' टेस्ट का उपयोग सार्थकता की जाँच करने के लिये किया गया।

**निष्कर्षः**–शोधार्थी ने शोध कार्य में पाया की बालक–बालिकाओं के पारिवारिक, सामाजिक स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है। जबकि विद्यालय समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है।

4. **बिन्नूलाल (2010)** "सामाजिक कौशल एवं शिक्षण योग्यता का विद्यार्थी एवं शिक्षक के मध्य संवेगात्मक ज्ञान के संबंधों का अध्ययन।"

1. आन्ध्रप्रदेश केरला– शोध विषय में सामाजिक कौशल एवं सामाजिक नियम को जानने में संवेगात्मक ज्ञान कितना महत्वपूर्ण सार्थक, मानव व्यवहारों की उपयोगिता में व्यवसायिक एवं व्यक्तिगत सफलता का अध्ययन करना।

2. वर्तमान अध्ययन में सर्वे विधि का उपयोग किया गया। न्यादर्श के रूप में 350 विद्यार्थियों और शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया।

3. आँकड़ों की सार्थकता की जाँच में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, 'टी' टेस्ट, सहसंबंध गुणांक सांख्यिकी विधि का चयन किया।

**निष्कर्षः–** शोध अध्ययन में विद्यार्थियों तथा शिक्षकों का संवेगात्मक ज्ञान एवं सामाजिक कौशल के मध्य सकारात्मक संबंध और शिक्षण योग्यता के मध्यम भी सकारात्मक सार्थकता पायी गयी, जिसमें शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में सामाजिक कौशल विद्यार्थियों को दी जाती है। जिससे अतिरिक्त शिक्षण कौशल का विकास हो सके।

**5. अब्रराहम (2010)** "व्यवसायिक अध्ययन में विद्यार्थियों का संवेगात्मक ज्ञान, स्वाभिमान एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।"

1. प्रस्तुत शोध कार्य विद्यार्थियों की व्यवसायिक अध्ययन समस्या में संवेगात्मक ज्ञान तथा स्वाभिमान तथा शैक्षिक उपलब्धि की भूमिका का अध्ययन करना।

2. प्रस्तुत शोध में शामिल निजी विश्वविद्यालय संबंधित महाविद्यालय ,प्रादेशिक विश्वविद्यालयसे व्यवसायिक शिक्षा के बारे में जानना, जिनका अध्ययन मानकीकृत उपकरणों के माध्यम से किया गया।

**निष्कर्षः**–शोधकर्ता ने प्रत्यक्ष रूप से व्यवसायिक अध्ययन के साथ संवेगात्मक ज्ञान, स्वाभिमान संबंधों मे विद्यार्थियों के शिक्षण में शैक्षिक उपलब्धि सकारात्मक सार्थकता प्राप्त की जिसमें $r = 0.310$ पर मान्य किया गया।

**6. भदौरिया (2012)** "किशोर छात्र–छात्राओं के स्वप्रत्यय का उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन का अध्ययन" पर शोध किया।

1. प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा स्वप्रत्यय का शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन पर प्रभाव को जानना।

2. इसमें न्यादर्श का चयन लाटरी विधि के माध्यम से 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

3. शोध कार्य में आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिये पैरामैट्रिक सांख्यिकीय के तहत पियर्सन सहसंबंध विधि तथा चरिता विश्लेषण सांख्यिकीय का उपयोग किया।

**निष्कर्षः**–प्रस्तुत शोध निष्कर्ष में पाया गया कि सामाजिक समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है, परन्तु छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक समायोजन प्रभाव का सार्थक अंतर पाया गया।

**7. मिश्रा (2012)** "जयपुर हायर सेकेण्डरी स्कूल के विद्यार्थियों पर संवेगात्मक ज्ञान एवं शैक्षिक उपलब्धि प्रभाव का अध्ययन।"

1. वर्तमान अध्ययन में मुख्य उद्देश्य हाई स्कूल के विद्यार्थियों का संवेगात्मक ज्ञान एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का पता लगाना।
2. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में 1000 विद्यार्थियों का साधारण लाटरी एवं समूह न्यादर्श का चयन करके सर्वे विधि का अध्ययन किया गया।
3. आँकड़ों का विश्लेषण के लिये सहसंबंध गुणंक सांख्यिकीय विधि का उपयोग किया गया।

**निष्कर्षः–** सामुहिक रूप से संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि का सकारात्मक प्रभाव बालिका के अध्ययन में देखा गया, जिसे नकारात्मक संबंध बालक में पाये गये जिससे शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ावा मिलने में सहायता प्रदान की।

**8. प्रीति (2012–2013)** "संवेगात्मक ज्ञान एवं शैक्षिक उपलब्धि में विद्यार्थियों की भूमिका।"

1. प्रस्तुत शोध विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास एवं उद्देश्य की प्राप्ति संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता का पता लगाना जिसमें शिक्षक, परिवार तथा समाज की भूमिका को महत्व दिया गया है।
2. शोध का न्यादर्श व्यक्तिगत अध्ययन पर अधारित होने से संपूर्ण जनसंख्या का चयन सर्वे पद्धति के द्वारा किया गया।
3. आँकड़ों का विश्लेषण चरों की प्रासंगिकता जिनमें शैक्षिक उपलब्धि, संवेगात्मक बुद्धि, सामाजिक ज्ञान, गुणात्मक शिक्षा का उपयुक्त सांख्यिकी विधि से अंतर देखा।

**निष्कर्षः–** विद्यार्थियों के शिक्षा विकास एवं सुधार में संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध सार्थकता एवं सामाजिक ज्ञान का शैक्षिक

उपलब्धि पर प्रभाव को जाना गया, शोध में संवेगात्मक बुद्धि की भूमिका हमारे संवेगात्मक साक्षरता शैक्षिक समझ, प्रभाव कारी क्षेत्र निर्माण, स्वयं मूल्यांकन, प्रभावी प्रबंधन, अभिभावकीय मार्गदर्शन, शैक्षिक अभिप्रेरणा में सहायक होती है।

**9.राय (2013)** "किशोर अवस्था के विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा, संवेगात्मक ज्ञान एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंधों का अध्ययन करना।"

1. प्रस्तुत शोध में किशोर अवस्था में विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा संवेगात्मक ज्ञान एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच कुछ मध्य एवं निम्न स्थिति को जानना।

2. न्यादर्श का चयन में 105 विद्यार्थीयों (48 बालक और 57 बालिका) को कक्षा 11वीं का पटना विद्यालय से साधारण लाटरी विधि माध्यम से चयन किया।

3. आँकड़ों के विश्लेषण के लिये पियर्सन सहसंबंध विधि के द्वारा विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा, संवेगात्मक ज्ञान एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया।

**निष्कर्षः–** शोध के उपरांत अध्ययन में संवेगात्मक ज्ञान एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक संबंध प्राप्त हुआ जिसमें बालक एवं बालिका के अभिप्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि का भी सकारात्मक संबंध पाया।

**10.लोरेंस एवं अरूल (2013)** "कन्या कुमारी जिले के हाई स्कूल विद्यार्थियों का संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।"

1. प्रस्तुत शोध उद्देश्य हाईस्कूल के विद्यार्थियों के मध्य संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि और परिवेश का अध्ययन करना।

2. शोध विषय में कक्षा 9वीं तथा 11वीं के 400 विद्यार्थियों जो हाईस्कूल, हायर सेकेण्ड्री स्कूल का स्तरीयकृत विधि से चयन किया जिसमें 14 से 16 वर्ष की आयु वाले विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

3. शोध विषय में आँकड़ों के विश्लेषण के लिये प्रमाणिक विचलन, 'टी' टेस्ट, चरिता विश्लेषण सांख्यिकी और पियर्सन गुणांक सहसंबंध प्रविधियों का चयन किया गया।

**निष्कर्षः–** प्रस्तुत शोध निष्कर्ष में पाया की हाई स्कूल विद्यार्थियों का संवेगात्मक बुद्धि का स्तर औसत और शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भी औसत प्राप्त हुआ। विद्यार्थियों का सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक परिवेश हमारे स्व–अभिप्रेरणा में प्रत्यक्ष रूप जैसे सेमीनार, वर्कशॉप, गेस्ट लेक्चरर, आदि विशेष रूप से शिक्षाशास्त्री और मनोवैज्ञानिक सम्मान में सहायक होता है।

**11. अहमर एवं अनवर (2013)** "हायर सेकेण्ड्री के विद्यार्थियों का सामाजिक, आर्थिक स्थिति के मध्य शैक्षिक उपलब्धि के संबंधों का अध्ययन।"

1. शोधार्थी ने अध्ययन क्षेत्र में बालक एवं बालिका के शैक्षिक उपलब्धि में सामाजिक, आर्थिक स्थिति का प्रभाव देखा गया।

2. न्यादर्श के रूप में 200 छात्र, 102 बालक और 98 बालिका जिनकी उम्र 15–19 वर्ष के मध्य हो शामिल किया गया।

3. ऑकड़ों को एकत्रित करने के लिये सामाजिक आर्थिक स्थिति मापनी, आर.एल. भारद्वाज (2005) द्वारा निर्मित का उपयोग किया। विश्लेषण पद्धति में मध्यमान विचलन, प्रमाणिक विचलन, एवं 'टी' टेस्ट का उपयोग किया।

**निष्कर्षः–** शोधार्थी ने शोध कार्य के समय सामाजिक, आर्थिक स्थिति के बीच उच्च तथा निम्न अंतर का पता लगाया जिसमें शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों के मध्य सार्थक संबंध तथा प्रभावों का अध्ययन किया।

**12. गुप्ता एवं कटोच (2013)** "कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों का सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।"

1. वर्तमान शोध विषय में कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों का सामाजिक आर्थिक स्थिति और शैक्षिक उपलब्धि परीक्षा में पता लगाना।

2. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में 160 विद्यार्थियोंजिसमें 8 सरकारी स्कूल जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश से लिया है, प्रस्तुत शोध विषय में स्तरीयकृत विधि के द्वारा बालक–बालिका तथा ग्रामीण, शहरी क्षेत्र का चयन किया।

3. आँकड़ों का विश्लेषण में मध्यमान विचलन, प्रमाणिक विचलन, 'टी' टेस्ट तथा सहसंबंध का उपयोग किया।

**निष्कर्षः–** शोधार्थी ने शोध अध्ययन के समय सामाजिक, आर्थिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के माध्मय से सार्थक अंतर तथा सहसंबंध का अध्ययन किया।

**13. मेनन एवं स्वेता (2014)** "महाविद्यालयीन छात्रों का शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि एवं अध्यात्मिक बुद्धि के प्रभावों का अध्ययन।"

1. शोधार्थी ने वर्तमान अध्ययन में विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि एवं अध्यात्मिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन महाविद्यालय स्तर पर किया।

2. प्रस्तुत शोधकार्य शोधार्थी ने गुरूनानक देव शासकीय महाविद्यालय जिला तरण–तारण, गुरूनानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर से लिया गया है। जिसमें न्यादर्श का चयन समूह न्यादर्श के रूप में विद्यार्थियों का चयन किया।

3. आँकड़ों का विश्लेषण विवरणात्मक सांख्यिकीय में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा द्विमार्गीय चरिता विश्लेषण का उपयोग परिकल्पना की जाँच तथा चरों के प्रभाव की जाँच के लिये किया।

**निष्कर्षः**–शोधार्थी के निष्कर्ष में अध्यात्मिक ज्ञान के साथ संवेगात्मक ज्ञान का पारस्परिक सार्थक संबंध प्राप्त हुआ। सामाजिक ज्ञान एवं अध्यात्मिक ज्ञान, संवेगात्मक ज्ञान के मध्य भी पारस्परिक प्रभाव का सार्थक संबंध प्राप्त हुआ।

**14. कुसूमलता (2014)** "पंजाब जिला संगरूर के किशोर अवस्था का सामाजिक समायोजन एवं पारिवारिक स्वरूप के मध्य संबंधों का अध्ययन।"

1. व्यक्ति समाज में व्यवहारगत समायोजन तथा भिन्न–भिन्न प्रकार के पारिवारिक स्वरूप में रहते है। वर्तमान शोध कार्य में शोधकर्ता ने किशोर अवस्था में सामाजिक समायोजन जो संयुक्त तथा एकांकी परिवार में रहते है। उनका अध्ययन किया गया है।

2. प्रस्तुत शोध जिला संगरूर पंजाब के ऐसे युवक जो संयुक्त तथा एकांकी परिवार से है। जिन्हें न्यादर्श के रूप में 100 युवाओं का चयन किया।

3. आँकड़ों का संकलन में जिला संगरूर के शासकीय विद्यालयों का चयन लाटरी विधि से किया। आँकड़ों का विश्लेषण में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, 'टी' टेस्ट का उपयोग किया गया।

**निष्कर्षः–** शोधकर्ता ने सामाजिक समायोजन का किशोर अवस्था में संयुक्त तथा एकांकी परिवारों के मध्य सार्थक अंतर पाया।

**15. बिन्दु एवं वाजीला (2014)** "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का संवेगात्मक परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि के संबंधों का अध्ययन"।

1. प्रस्तुत शोध कार्य अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शिक्षा में संवेगात्मक परिपक्वता एवं व्यवहारों के विकास का अध्ययन किया गया।

2. जिसमें न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि का चयन करके आँकड़ों का विश्लेषण जो विवरणात्मक विधि के साथ मध्यमान विचलन और प्रमाणिक विचलन और पेर्यसन सहसंबंध गुणांक सांख्यिकी विधि का उपयोग किया गया।

**निष्कर्षः–** शोधकर्ता ने संवेगात्मक परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंधों को सार्थक रूप में पाया तथा बालक एवं बालिकाओं के व्यवहारों में सार्थक अंतर पाया गया।